3 स्थानीय वास्तुकला

ऐतिहासिक इमारतें या स्थानीय वास्तुकला के विशिष्ट उदाहरण हमें चकित कर देते हैं और हमें मजबूर कर देते हैं कि हम उन्हें बनाने वाले लोगों तथा संस्कृति के बारे में और अधिक जानें। इसका न केवल वास्तुकला, सौंदर्यबोध, इतिहास, अभिलेख, पर्यावरण, पुरातत्व की दृष्टि से महत्त्व है, बल्कि राजनीतिक, आध्यात्मिक तथा प्रतीकात्मक मूल्य भी है। परंतु इसका सबसे पहला प्रभाव भावनात्मक है, जो हमारी सांस्कृतिक पहचान और निरंतरता का प्रतीक है – हमारी विरासत का एक अंग है।

– सर बर्नार्ड फील्डेन

क्रियाकलाप 3.1

कक्षा–11

समय–कक्षाकार्य और गृहकार्य

- अपने कस्बे/शहर/आस-पास की कम से कम 20 अलग-अलग प्रकार की इमारतों की सूची बनाएँ (बच्चों के अलग-अलग समूह शहर के विभिन्न हिस्सों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं)।
- प्रत्येक इमारत का महत्त्व बताएँ।
- सूची में प्रत्येक इमारत के पते और उस तक पहुँचने के रास्ते लिखें।

भारत के प्रत्येक क्षेत्र में वास्तुकला की एक विशिष्ट शैली विकसित हुई। लक्ष्मीनारायण मंदिर, चंबा, हिमाचल प्रदेश

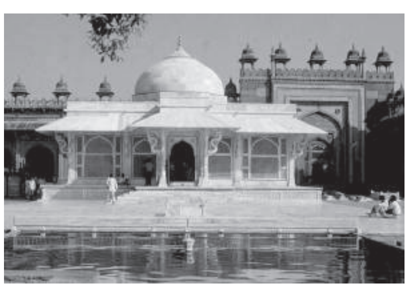

फतेहपुर सीकरी, आगरा में संगमरमर से बनाई गई सलीम चिश्ती की दरगाह

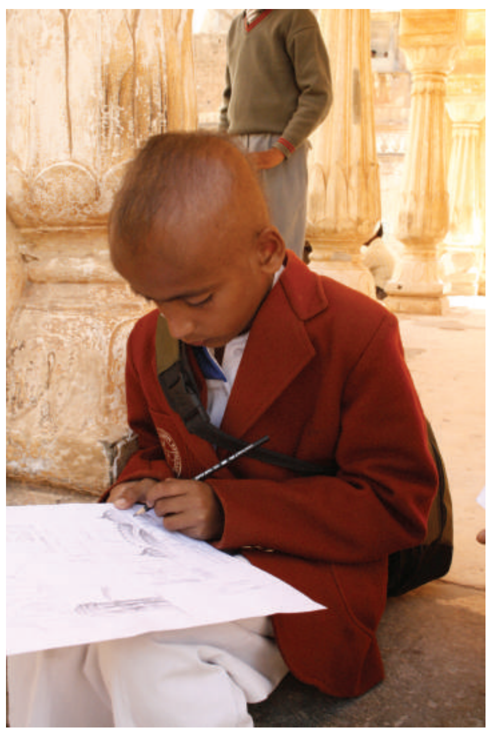

विरासत स्थल पर चित्र बनाते छात्र

© NCERT not to be republished

भारत के प्रत्येक राज्य और क्षेत्र में भवन-निर्माण की अलग-अलग शैलियाँ क्यों हैं?

अलंकृत ईंटों से बना मंदिर, विष्णुपुर सत्रहवीं शताब्दी, पश्चिम बंगाल

मिट्टी की अलंकृत टाइलों का अनोखा कार्य विष्णुपुर, सत्रहवीं शताब्दी, पश्चिम बंगाल

क्रियाकलाप 3.2

एक ऐतिहासिक इमारत का दस्तावेज़ तैयार करना

कक्षा–11 और 12

समय–कक्षाकार्य और गृहकार्य

आपके द्वारा 3.1 में तैयार की गई सूची में से अपनी मनपसंद एक इमारत के लिए एक दस्तावेज़ी कार्ड बनाएँ। इस कार्ड से आपको इमारत की दस्तकारी, कौशल और तकनीकों के बारे में अधिक जानकारी पाने के लिए सहायता मिलनी चाहिए।

इमारतों के लिए दस्तावेज़ी कार्ड

- **इमारत का नाम :** --
- **पता :** --
- **स्थान :** --
- **स्वामित्व :** --
- **इमारत का उपयोग :** --

- **क्या इसके उपयोग में पिछले वर्षों में बदलाव आया है:** ---

इमारत का चित्र बनाएँ

इमारत की अनूठी विशेषताएँ चित्रित करें

- **इमारत के आस-पास इस समय क्या है?**

आपका नाम : कक्षा :

© NCERT not to be republished

क्रियाकलाप 3.3

अप्रत्यक्ष विरासत और इमारतें

कक्षा–11 और 12
समय–स्थल-भ्रमण

क्रियाकलाप 3.2 में आपके द्वारा तैयार किए गए दस्तावेज़ के आधार पर अब इनकी खोजबीन करें।

इमारत का महत्त्व

- यह इमारत क्यों प्रसिद्ध है?
  (क्या यह एक मकबरा, किला, महल, धार्मिक इमारत या किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति का निवास स्थल है?)
- इसे किसने बनवाया था? क्या वह व्यक्ति उस समय प्रसिद्ध था?
- क्या इस इमारत के साथ कोई दंत-कथा जुड़ी हुई है?

इमारत का विकास

- यह इमारत कितनी पुरानी है?
- क्या यह इमारत इतिहास के विभिन्न चरणों में अलग-अलग लोगों द्वारा बनवाई गई है?

इमारत के लिए प्रयुक्त सामग्री

- इसे बनाने के लिए किस सामग्री का प्रयोग हुआ है?
- यह सामग्री कहाँ से लाई गई थी?

इमारत का कार्य

- यह इमारत किस काम आती थी?
- क्या समय के साथ इस इमारत के उपयोग में कोई बदलाव आया?
- क्या इसमें कोई मरम्मत या परिवर्तन किए गए? क्या आप बता सकते हैं कि कौन-से बदलाव पुराने हैं और कौन-से नए?

इमारत और उसकी सामाजिक प्रासंगिकता

- क्या यह इमारत अनूठी है? कार्यों और रंग-रूप के आधार पर आप अपने शहर की अन्य इमारतों से इसकी तुलना किस प्रकार कर सकते हैं?
- क्या यह इमारत आपको उन दिनों के सामाजिक जीवन के बारे में कोई संकेत देती है, जब इसका निर्माण किया गया था?
- इमारत को देखते हुए क्या आपको लगता है कि उन दिनों की जीवन-शैली आज की जीवन-शैली के समान थी या नहीं?

जाली सिदी सैयद मस्जिद, अहमदाबाद, गुजरात

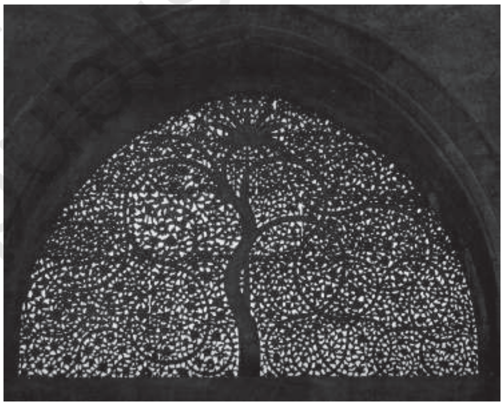

चित्रकारी युक्त महल, आमेर का किला, जयपुर, राजस्थान

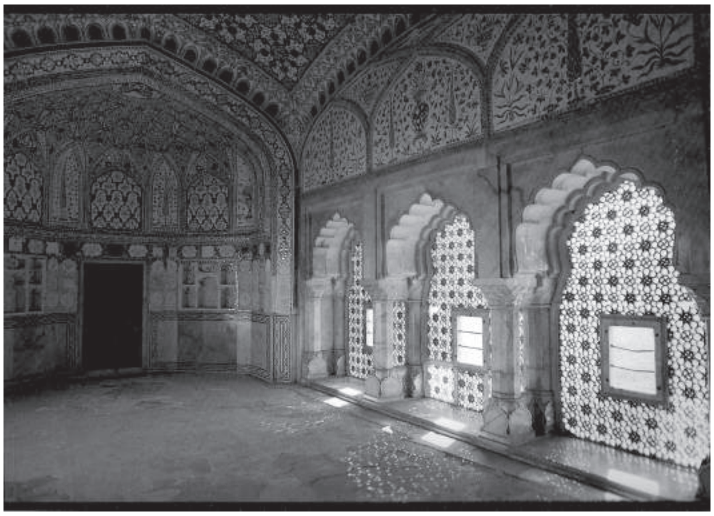

© NCERT not to be republished

क्रियाकलाप 3.4

सामग्री, गुणवत्ता और कार्य

कक्षा–11

समय–स्थल-भ्रमण

अपने आस पास की किसी एक महत्वपूर्ण इमारत का भ्रमण करें। चुनी गई इमारत को बनाने में इस्तेमाल की गई विभिन्न सामग्रियों की सूची बनाएँ। विभिन्न वस्तुओं, सामग्रियों की सूची के साथ एक चार्ट बनाएँ जिसमें इससे संबंधित दस्तकारी विशेषज्ञता और उनके उपयोग व कार्यों का भी उल्लेख हो।

वस्तु	सामग्री	दस्तकारी कौशल	यह सामग्री क्यों इस्तेमाल की गई
1.दरवाज़ा	लकड़ी	बढ़ईगीरी	टिकाऊपन, उपलब्धता

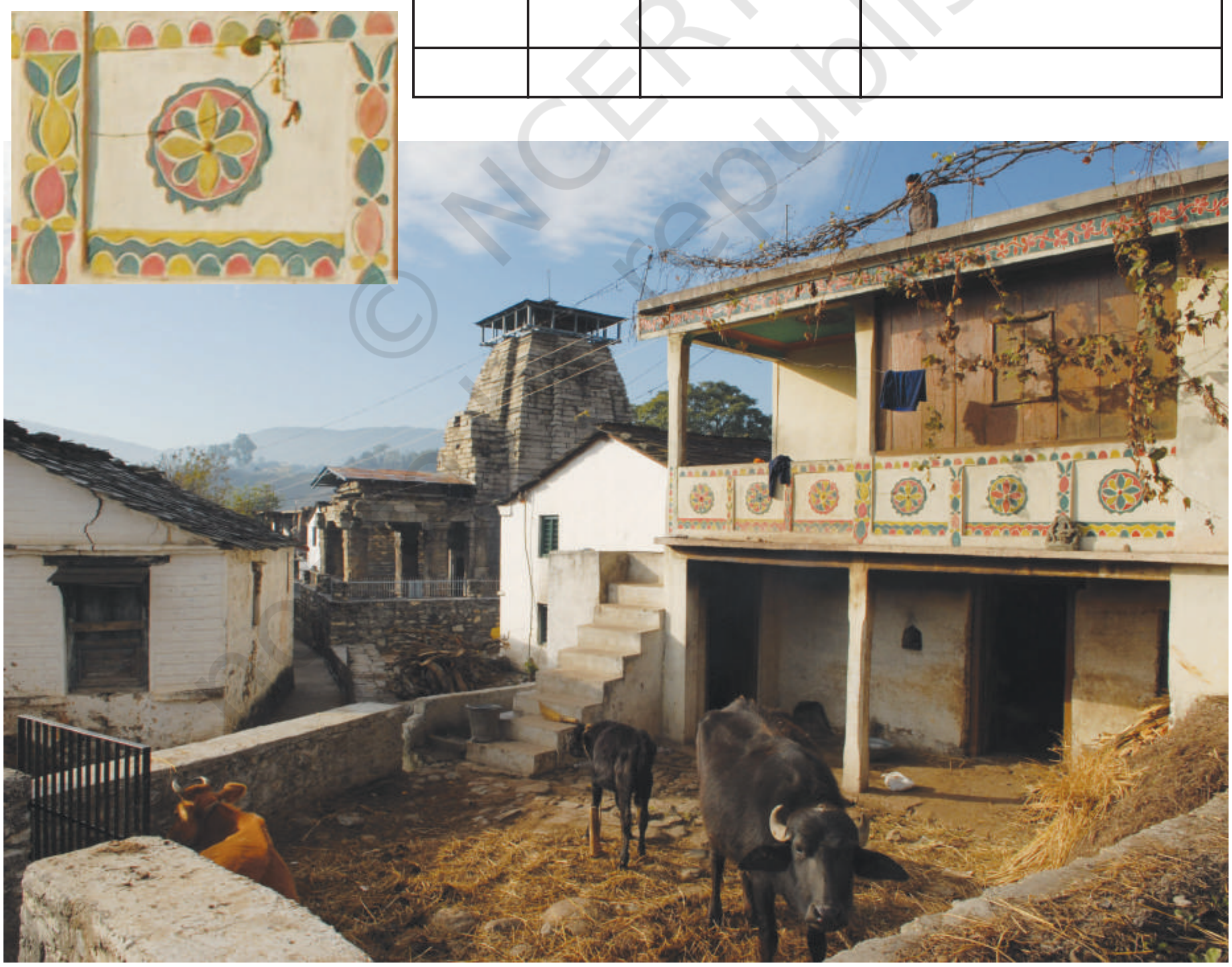

© NCERT not to be republished

ताजमहल, आगरा, उत्तर प्रदेश

क्रियाकलाप 3.5

पत्थरों में गढ़ी गई कहानी

कक्षा–11

समय–कक्षाकार्य

भारत में कई प्रकार के पत्थर पाए जाते हैं। इनमें से प्रत्येक अपनी विशेष गुणवत्ताओं के कारण वास्तुकार/मिस्त्री/भवन-निर्माता द्वारा पसंद किया जाता है।

- क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि ताजमहल को बनाने में किस सामग्री या पत्थरों का इस्तेमाल किया गया है?
- इसमें प्रयुक्त पत्थर का रंग बताएँ?
- इसमें प्रयुक्त पत्थर का पोत बताएँ?
- यह पत्थर छूने पर गर्म लगता है या ठंडा?
- क्या आप जानते हैं कि यह पत्थर कैसे साफ किया जा सकता है?
- क्या आपको इस बारे में कोई जानकारी है कि यह पत्थर कहाँ से लाया गया था?
- क्या यह स्थानीय रूप से उपलब्ध था या यह देश के किसी अन्य हिस्से से लाया गया था?
- यह पत्थर इस स्मारक के निर्माण के समय मँहगा था या सस्ता?
- क्या यह वही पत्थर है जो आज भी घरों या इमारतों को बनाने में इस्तेमाल होता है?
- इस स्मारक को बनाने में इसी पत्थर का इस्तेमाल क्यों किया गया था? इसके तीन कारण बताएँ।

चूने का पत्थर

चूने का पत्थर रंग, पोत और उद्भव में अलग-अलग होता है। इस चट्टान में मुख्य रूप से खनिज और कैल्साइट होते हैं। वनस्पति और जंतु-जीवन दोनों ही इनके निर्माण में योगदान देते हैं।

बलुआ पत्थर

बलुआ पत्थर हवा, पानी और बर्फ की मिली जुली गतिविधि से बनने वाली तलछटी चट्टान है। बलुआ पत्थर का इस्तेमाल भारत की अनेक ऐतिहासिक इमारतों को बनाने में किया गया है।

ग्रेनाइट

ग्रेनाइट आग्नेय या कायांतरित (मेटामॉर्फिक) दोनों प्रकार की चट्टान हो सकती है। यह कठोर और मजबूत होती है तथा निर्माण-कार्य में इसका काफ़ी अधिक इस्तेमाल किया जाता है।

बेसाल्ट

बेसाल्ट ज्वालामुखी से उत्पन्न चट्टान है जो दुनिया भर में पाई जाती है। इसका रंग गहरे सलेटी से लेकर हरे रंग की आभा के साथ-साथ लगभग काला भी हो सकता है।

© NCERT not to be republished

एक पारंपरिक घर के दरवाज़ों और खम्भों को बनाने में किस कौशल की आवश्यकता होती है?

क्रियाकलाप 3.6

दरवाज़े

कक्षा–11

समय–कक्षाकार्य और गृहकार्य

चेटिनाड दरवाज़ा, तमिलनाडु

भारत में अनेक प्रकार की लकड़ी उपलब्ध हैं जो तराशने के कार्य के लिए उत्तम हैं। अत्यधिक भूरे रोज़वुड से लेकर नर्म आम की लकड़ी इस काम में प्रयोग की जाती है। इस लकड़ी को तेल और पॉलिश से संरक्षित किया जा सकता है या पेंट द्वारा इसकी सतह को अधिक टिकाऊ और सुंदर बनाया जा सकता है।

भारत के प्रत्येक घर या धार्मिक स्थल में प्रवेश द्वार का अत्यधिक महत्व है। यह प्रवेश द्वार ही है जहाँ आगंतुक का स्वागत किया जाता है, जहाँ लोगों से सामना होता है जो घर के भीतर खुलता है इसीलिए इसका विशेष महत्व है। जिस दरवाज़े से होकर हम गुज़रते हैं उस पर लगी आड़ी बीम पर सामान्यत: किसी देवता की आकृति बनाई जाती है या कोई संदेश या चिह्न लगाया जाता है, ऐसा माना जाता है कि यह उस प्रवेश द्वार से होकर गुज़रने वाले लोगों को सौभाग्य, समृद्धि और आशीर्वाद प्रदान करता है।

"मेरे शहर के प्रवेश द्वार" विषय पर एक चार्ट बनाएँ

- अपने आस-पास की सार्वजनिक एवं निजी इमारतों, बाज़ार में दरवाज़ों और प्रवेश द्वारों का अध्ययन करें।
- इन दरवाज़ों के डिज़ाइन और सजावट कैसी है?
- अलग-अलग प्रकार के दरवाज़ों की तसवीरें बनाएँ/फोटो खींचें और लिखें कि किस इमारत का कौन-सा दरवाज़ा है जैसे-घर, दुकान आदि। इन्हें बनाने में किस सामग्री का उपयोग किया गया है तथा इसमें किस प्रकार की सजावट की गई है?

ग्रामीण घर का प्रवेश द्वार, उड़ीसा

क्रियाकलाप 3.7

घर की सुरक्षा

कक्षा–12

समय–गृहकार्य

पारंपरिक ताला

भारतीय धातु कर्मियों ने शताब्दियों से घरों या सार्वजनिक इमारतों के प्रवेश द्वार को सुरक्षित बनाने के लिए कई प्रकार के ताले बनाए हैं। इनमें से कुछ तालों को रोचक बनाने के लिए कुत्तों, घोड़ों या बिच्छुओं के रूप में भी डिज़ाइन किया गया है। इन तालों का इस्तेमाल दरवाज़े या बक्सों को बंद करने के लिए किया जाता था और इसमें ताला लगाने की प्रक्रिया और कुंजियों का प्रयोग चतुराई से किया जाता था।

निम्नलिखित में से किसी एक विषय को चुनें और मनोरंजक तथा अनोखी वस्तुओं का एक अल्बम बनाएँ।

- अपने इलाके में दरवाज़ों पर लगाए जाने वाले ताले
- घरों की छतों पर हवा की दिशा बताने वाला उपकरण
- अलग-अलग डिज़ाइनों के दरवाज़े
- दरवाज़ों और दुकानों पर अंकित चिह्न

NCERT not to be republished

क्रियाकलाप 3.8

आदर्श घर

कक्षा–11

समय–गृहकार्य

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में सदैव से घर बनाने की अनेक पारंपरिक शैलियाँ या स्थानीय वास्तुकलाएँ रही हैं। अपने राज्य में पारंपरिक घरों को खोज कर उनकी और उनमें रहने वाले परिवारों की ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त करने की कोशिश करें। एक स्थान की वास्तुकला पर अनेक कारकों का प्रभाव हो सकता है।

- मौसम
- इमारत निर्माण की सामग्री की उपलब्धता
- जीवन-शैली या व्यवसाय

इन दोनों पृष्ठों पर दी गई तसवीरें देखें। किसी एक को चुनें और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दें। इन वस्तुओं को देख कर और समझ कर इनका विश्लेषण करें।

(क) चयनित इमारत का क्षेत्र

(ख) मौसम की विशेषताएँ

(ग) इमारत की क्या उपयोगिता है?

(घ) इसके निर्माण में प्रयुक्त सामग्रियों की सूची

- नींव
- फर्श
- छत
- ऊपरी छत
- दीवारें
- खम्भे
- चौखटें
- खिड़कियाँ
- दरवाज़े
- आँगन

(ङ) इसके निर्माण में प्रयुक्त विभिन्न कौशल और दस्तकारी को पहचानें (मिस्त्री द्वारा पत्थर पर किया गया कार्य, बढ़ईगीरी, पेंटिंग आदि)

प्राकृतिक रूप से उपलब्ध सामग्री से बने विभिन्न प्रकार के ग्रामीण घर

© NCERT not to be republished

(च) यदि ग्रामीण घरों को पर्यावरण और मौसम के अनुसार बनाया जाता है, तो ये इमारतें मौसम से बचाव के लिए किस प्रकार डिज़ाइन की जाती हैं?

1. गुजरात के कच्छ इलाके में पारंपरिक गोल घर–यह गोल आकार सूर्य के ताप, ठंडी हवाओं और रेतीले तूफानों से प्रभावित सतह को कम करता है।
2. जम्मू और कश्मीर का एक पर्वतीय घर–यहाँ भेड़ और याक जैसे मवेशियों को घर के भूतल पर रखा जाता है, जो निवास स्थान को गर्म बनाए रखने में सहायक होते हैं।
3. राजस्थान में पत्थर का घर–ये पत्थर घर को गर्मी में ठंडा और सर्दी में गर्म रखते हैं।
4. ब्रिटिश शासनकाल के दौरान बनाए गए बँगले–ये घर आम तौर पर बरामदों से घिरे होते थे। ये बरामदे घर को सूर्य के ताप और मानसून की बारिश के असर से सुरक्षित रखते थे और यहाँ से ठंडी हवा अंदर आती थी।
5. केरल का पारंपरिक घर–केरल में वर्ष में दो बार मानसून आता है। यहाँ के घरों की छतें ढलान वाली होती हैं ताकि बारिश का पानी बह कर निकल जाए।
6. गोवा के विशाल भवन (मैंशन)–कुछ शताब्दियों पूर्व जब राज्य में पुर्तगालियों का शासन था, तब इन भव्य इमारतों का निर्माण किया गया। यह भव्य घर इस बात का संकेत देते हैं कि कुछ पुर्तगाली नागरिक गोवा में अत्यंत विलासितापूर्ण जीवन-शैली के साथ रहते थे।
7. मेघालय का फूस से बना घर–इसकी ढलान वाली छतें बारिश के पानी के बहने में सहायक होती हैं और यह पूरी संरचना लकड़ी के ढाँचे पर बनी होती है जो इसे बारिश के पानी में बहने से बचाती है।

1

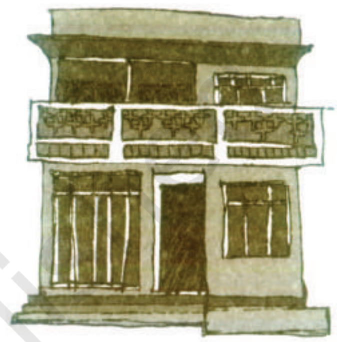
2

3

7

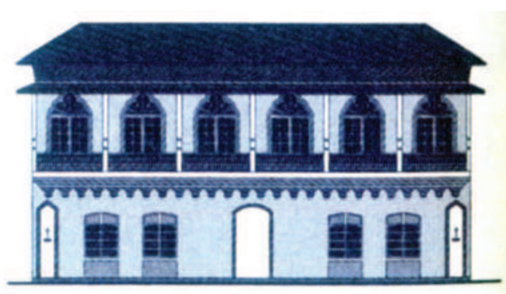
4

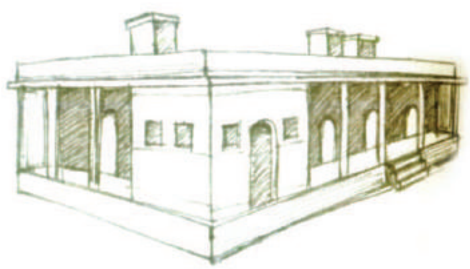
6

5

क्रियाकलाप 3.9

राजमिस्त्री से सीखना

कक्षा–12
समय–कक्षाकार्य या स्थल-भ्रमण

एक राजमिस्त्री/वास्तुकार को अपनी कक्षा में आमंत्रित करें या इमारत के निर्माण-स्थल पर जाकर उनसे मिलें। राजमिस्त्री/भवन-निर्माता/वास्तुकार से ये प्रश्न पूछें –

1. वे कितने दिनों से इस कार्य में संलग्न हैं?
2. उन्होंने यह कार्य कैसे सीखा था?
3. क्या वे इसी कला से जुड़े हुए लोगों के साथ रहते हैं?
4. ये दस्तकार शहर के किस भाग में रहते हैं?
5. क्या ये दस्तकार अपने बच्चों को यह दस्तकारी कौशल सिखाना चाहेंगे?
6. इस कला प्रक्रिया के विभिन्न सोपानों को क्रमबद्ध लिखें।
7. वे किस प्रकार की इमारतें बनाते हैं?
8. वे कौन-सी सामग्री इस्तेमाल करते हैं?
9. विभिन्न कार्यों के लिए अलग-अलग सामग्रियों का इस्तेमाल क्यों किया जाता है?
10. आपके द्वारा एकत्रित जानकारी से एक स्क्रैप बुक बनाएँ।

मिट्टी की खपरैल की छत, मध्य प्रदेश

फूस की छत, उड़ीसा

© NCERT not to be republished

क्रियाकलाप 3.10

सुनियोजित पारंपरिक घर

कक्षा–12

समय–कक्षा-भ्रमण और गृहकार्य/अवकाश गृहकार्य

अपने क्षेत्र की ग्रामीण वास्तुकला की विशिष्ट शैलियों का एक अल्बम बनाएँ।

1. अपने क्षेत्र के मौसम का अभिलेख (रिकॉर्ड) तैयार करें।
2. अपने क्षेत्र के विभिन्न समुदायों के पारंपरिक घरों की पहचान करें।
3. किसी पारंपरिक घर की एक योजना तैयार करें।
4. इसका एक मॉडल बनाएँ।
5. गृह स्वामी से उनके घर संबंधी और परिवार के इतिहास की जानकारी हेतु साक्षात्कार लें।
6. घर की योजना का वर्णन करें और बताएँ कि प्रत्येक स्थान का उपयोग कैसे किया गया है।
7. इस घर के निर्माण में किस सामग्री का उपयोग किया गया है?
8. प्रत्येक प्रकार की सामग्री के उपयोग के कारण बताएँ।
9. पारंपरिक ग्रामीण घर के संदर्भ में निम्नलिखित को स्पष्ट करें–
   - छतों का आकार
   - बारिश, ठंड, गर्मी के बाद घरों का रखरखाव/मरम्मत/सुधार
10. घर की सजावट कैसे की जाती है? या घर में सजावट के विभिन्न कार्यों का उल्लेख करें।
11. अगले पृष्ठ पर दिए गए नमूने के दस्तावेज़ी कार्ड का उपयोग करते हुए अपनी कक्षा के छात्रों के साथ अपने क्षेत्र की स्थानीय वास्तुकला का एक दस्तावेज़ी पुस्तकालय तैयार करें।

फूस का घर, असम

बिहार के घर की आंतरिक सज्जा

स्थानीय/पारंपरिक घर के लिए दस्तावेज़ी कार्ड

- इमारत का नाम : --
- पता : --
- स्थान : --
- स्वामित्व : --
- इमारत का उपयोग क्या है? --
- क्या इसके उपयोग में पिछले वर्षों में बदलाव आया है? --
- इमारत के आस-पास इस समय क्या है? --

- इस इमारत के निर्माण में प्रयुक्त सामग्री की सूची: --
  - *नींव*
  - *फ़र्श*
  - *छत*
  - *ऊपरी छत*
  - *दीवारें*
  - *खिड़कियाँ*
  - *दरवाज़े*
  - *आँगन*
  - *अन्य*

इमारत का चित्र बनाएँ

- इसकी अनोखी विशेषताओं की सूची

- इसके निर्माण में प्रयुक्त विभिन्न कौशल और शिल्प की पहचान करें (पत्थर का कार्य, लकड़ी का कार्य, चित्रकारी आदि)

आपका नाम : -------------------- कक्षा : --------------------

© NCERT not to be republished